प्रस्तावना

गांधी के सत्याग्रह का नाम लेते ही रंगभेद, शोषण, अन्याय तथा अत्याचार के विरूद्ध संघर्ष करने की भावना मन में व्याप्त हो उठती है। गांधी ने दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के विरूद्ध एवं भारत में विदेशी तथा सामंतवादी शासन के विरूद्ध सफलतापूर्वक सत्याग्रह आंदोलन का नेतृत्व किया जो दक्षिण अफ्रीका और भारत के लिए एक नया प्रयोग के साथ-साथ सम्पूर्ण विश्व समुदाय के लिए अपने आप में अदभुत प्रयास था। गांधी ने पारंपरिक मार्गों को त्याग कर दक्षिण अफ्रीका एवं भारत के आंदोलनों में अपने प्रभाव से महिलाओं को प्रवेश दिला कर आंदोलन को सत्य अहिंसा, सत्याग्रह, असहयोग तथा सविनय अवज्ञा को एक नई दिशा प्रदान की।

भारतीय राजनीति रंगमंच पर आने से पूर्व गांधी अपने दक्षिण अफ्रीका प्रवास काल 1893 से 1914 तक अपने अहिंसात्मक युद्ध के प्रयोग के लिए लगे रहे। वास्तविक अर्थ में 1914 तक का गांधी का दक्षिण अफ्रीका का प्रवास सत्याग्रह के विकास का उषाकाल था। इस क्रम में गांधी दक्षिण अफ्रीका रहते हुए अनिवार्य पंजीकरण, हस्तमुद्रण, अंत:प्रांतीय अप्रवास पर प्रतिबंध, बंधक मजदूरों पर लगाये जाने वाले करो तथा ईसाई विवाहों के अतिरिक्त सभी विवाहों को अमान्य ठहराने वाले कानूनों का विरोध करके भेदभावपूर्ण नीति तथा उससे उत्पन्न पाखंड के विरूद्ध जनमत तैयार किया। गांधी को सत्याग्रह का विचार टॉलस्टाय के अध्ययन और अपनी धर्मपत्नी कस्तूरबा से मिला। सत्याग्रह में महिलाओं की बढ़ती सहभागिता गांधी के चमत्कारिक प्रभाव से हुई। गांधी का ध्यान महिलाओं की जुझारू क्षमता पर पहली बार ध्यान दक्षिण अफ्रीका में प्रवासी भारतीय महिलाओं के अपने राजनीतिक विचारों से प्रभावित होती है। इनके नेतृत्व के अनेक आंदोलनों में महिलाओं का जेल में कठोर सजा झेलना, खदान श्रमिकों को हड़ताल में शामिल करना जैसे कार्यों में देख कर महिलाओं के आत्मत्याग और पीड़ा सहन की अदभूत क्षमता का अहसास हुआ।

इस प्रकार प्रवासी भारतीय महिला के दक्षिण अफ्रीका सत्याग्रह में त्याग, बलिदान से भारतीय महिलाओं के आजादी संघर्ष की प्रथम प्रेरणा की पृष्ठभूमि तैयार की। यहाँ से गांधी ने महिलाओं की संकल्प शक्ति का आकलन पाकर उनका आह्वान भारतीय महिलाओं को अपने पीछे चलाकर आजादी की मंजिल तक ले गया।

1919 से 1845 तक गांधी जी भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन पर छाए रहे। 1918 ई. में भारतीय राजनीतिक मंच पर गांधी के प्रवेश के साथ ही स्वतंत्रता संग्राम के आगे का सम्पूर्ण इतिहास सत्य अहिंसा और सत्याग्रह के आधार पर जन विद्रोह में परिणत हो जाता है। इस दौरान सत्याग्रह आंदोलन के विभिन्न चरणों में महिलाओं की महत्वपूर्ण भूमिका रही थी। 1920-22 के असहयोग आंदोलन में पहली बार महिलाओं भरी संख्या में आंदोलन से जुड़ कर खादी और चरखा को लोकप्रिय बनाने, शराब के दुकानों पर धरना और शराब के लाइसेंस की सरकारी नीलामी जैसे कार्य में आगे आई। 'राष्ट्रीय स्त्री सभा' का गठन किया गया। श्रमिक आंदोलन की अनेक प्रसिद्ध नामी 'ट्रेडयूनियन' महिलाएँ अपने से संगठित होने के लिए प्रयासरत थी।

सत्याग्रह आंदोलन के दूसरे चरण सविनय अवज्ञा आंदोलन में महिलाओं की भागीदारी संख्यात्मक और गुणात्मक दोनों ही दृष्टियों से 1920 के दशक की शुरूआत की भागीदारी से भिन्न थे। नमक सत्याग्रह आंदोलन में नमक बनाने तथा बेचने के काम में प्रत्येक तबके की महिलाओं को पहली बार पुलिस दमन का सामना करना पड़ा। शहरी और ग्रामीण लगभग 20 हजार महिला सत्याग्रही जेल गई। इस आंदोलन में महिलाओं की अधिक भागीदारी का प्रमुख कारण अनेक महिला संगठन और अनेक नेटवर्क का बनना। म.रा.स. लेडीज पिकेटिंग बोर्ड, ए. आई. डब्ल्यू. सी. (1926), देश सेविका संघ की लामबंदी, जुलूस व प्रभात फेरी, धरना आयोजन, खादी प्रचार-प्रसार तथा बेचने जैसे कार्य किए।

क्रांतिकारी आंदोलन से संबंधित छात्राओं का कार्य सीमित था। युवा लड़कियों का बंगाल आंदोलन में भागीदारी बढ़ने से महिलाओं के एक्टिविस्म का विरोध हुआ। 1930 के दशक में अनेक कम्यूनिष्ट महिलाओं का नारीवादी क्षेत्र में प्रवेश हुआ। इस क्रम में कम्यूनिष्ट और राष्ट्रवादी महिलाओं ने पहली बार राजनीतिक बंदियों को रिहाई के लिए देशव्यापी अभियान में एक साथ कम किया। 1939 में महिला राजनीतिक एक्टिविस्टों ने मिलकर "कांग्रेस महिला संघ" बनाया। बंगाल में ए. आई. सी. डब्ल्यू., उग्रवादी स्त्री संघ, युगांतर और भूमिगत कम्युनिस्ट इसमें शामिल था। छात्राओं द्वारा ए.ई.एस.एफ. छात्रा समिति का निर्माण किया गया। आंदोलन के तीसरे चरण भारत छोड़ों आंदोलन में महिलाएं भूमिगत होकर समानांतर सरकार बनाने, गैरकानूनी कार्य के विरोध में भागीदार हुई। आत्मरक्षा संबंधी प्रशिक्षण आत्मरक्षा समिति द्वारा दिया गया, इस क्रम

में महिला आत्मरक्षा समिति और कांग्रेस के बीच प्रतिस्पर्धा हुई। इस दौरान महिला- पुरूष की पपूरक और समानता की विचारधारा चर्चा का विषय बना रहा।

भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के विभिन्न चरणों में महिलाओं की भूमिका के स्वरूप के साथ-साथ शोध छात्र यह जानने के प्रयास में हैं कि महिलाओं में ऐसे कौन-कौन से गुण थे, जिसके कारण महिलाएं स्वतंत्रता संग्राम में अपनी व्यापक भागीदारी में सफल रहीं। इसके अलावा सत्याग्रह आंदोलन में पुरूष एक्टिविस्टों का महिला एक्टिविस्टों के प्रति क्या रूख था? राष्ट्रवादियों ने महिलाओं की आंतरिक और वाह्य राजनीतिक गतिविधियों में परंपरा से हट कर कुछ बदलाव लाने की क्यों नहीं सोची थी? वे कौन-कौन से कारक तत्व थे जिसके कारण महिलाएं सत्याग्रह में भाग ले सकी? सत्याग्रह आंदोलन में महिलाओं के स्वतंत्र अस्तित्व का पता लगाना,शोध छात्र का उपरोक्त शोध संबंधित समस्या के संबंध में एक प्रयास है।

***